Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23057
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23057

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

क्षेत्रीय लोक संगीत एवं विशिष्ट वाद्ययंत्र: 'वोकल फॉर लोकल' के संदर्भ में ग्रामीण आर्थिक उत्थान

अभिषेक दाधीच

1. शोधार्थी (Research Scholar) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय (Bhupal Nobles' university).

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, ग्रामीण उत्थान, वोकल फॉर लोकल, विशिष्ट वाद्ययंत्र, सांस्कृतिक धरोहर।

Abstract

भारत की असली पहचान यहाँ की अलग-अलग क्षेत्रीय संगीत परंपराओं में है, लेकिन अभी तक इसका पूरा आर्थिक लाभ नहीं उठाया गया है। यह शोध पत्र मुख्य रूप से सम्मेलन के विषय "क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और संगीत" पर आधारित है। यह बताता है कि क्षेत्रीय संगीत गाँवों की आर्थिक स्थिति सुधारने में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस अध्ययन में यह देखा गया है कि अगर हम स्थानीय वाद्ययंत्रों (जैसे रावणहत्था, कमायचा या जंतर) और लोक संगीत शैलियों को बढ़ावा दें, तो ग्रामीण कलाकारों और वाद्य बनाने वाले कारीगरों को रोजगार के पक्के अवसर मिल सकते हैं। 'वोकल फॉर लोकल' को ध्यान में रखते हुए, यह पत्र क्षेत्रीय संगीत की आज की स्थिति और स्थानीय कलाकारों के सामने आने वाली बाजार की चुनौतियों पर चर्चा करता है। इसके अलावा, यह पत्र बताता है कि क्षेत्रीय संगीत को मुख्य बाजार से जोड़ने पर न केवल पुराने और दुर्लभ वाद्ययंत्रों को खत्म होने से बचाया जा सकता है, बल्कि इससे स्थानीय पर्यटन (टूरिज्म) और व्यापार भी बढ़ेगा। उदाहरण के लिए, मेलों और उत्सवों में स्थानीय कलाकारों को मंच देकर उनकी आय बढ़ाई जा सकती है। अंत में, यह पत्र ऐसे सुझाव देता है जिससे क्षेत्रीय संगीत कमाई का एक मजबूत जरिया बन सके और संगीत से होने वाली समृद्धि का फायदा सीधे आम कलाकारों तक पहुँच सके।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- अभिषेक दाधीच
Address:- शोधार्थी (Research Scholar) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय (Bhupal Nobles' university).

Introduction:-

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध राष्ट्र है। भारतीय संस्कृति की असली आत्मा इसके गाँवों और वहाँ की क्षेत्रीय कला एवं लोक संगीत में निवास करती है। ऐतिहासिक रूप से, संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा है, बल्कि यह ग्रामीण जीवन शैली, संस्कारों, ऋतुओं और दैनिक श्रम से गहराई से जुड़ा हुआ है। वर्तमान समय में, जब देश 'आत्मनिर्भर भारत' और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब क्षेत्रीय संगीत की सामाजिक-आर्थिक क्षमता का मूल्यांकन करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में 'संगीत उद्योग' (Music Industry) एक बहुत बड़ा व्यापार बन चुका है, लेकिन इसका अधिकांश लाभ केवल मुख्यधारा (Mainstream) के व्यावसायिक या बॉलीवुड संगीत तक ही सीमित रह जाता है। क्षेत्रीय स्तर पर गाए जाने वाले लोकगीत और स्थानीय वाद्ययंत्र (जैसे- रावणहत्था, अलगोजा, कमायचा, भपंग आदि) धीरे-धीरे संरक्षण और बाजार के अभाव में लुप्त हो रहे हैं। इन वाद्ययंत्रों को बनाने वाले कारीगर और इन्हें बजाने वाले पारंपरिक कलाकार आज भी आर्थिक तंगी का सामना कर रहे हैं। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि यदि भारत सरकार की 'वोकल फॉर लोकल' (Vocal for Local) पहल को ग्रामीण संगीत कला और वाद्ययंत्र निर्माण से जोड़ दिया जाए, तो इसके क्या सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे स्थानीय कला को एक मजबूत आर्थिक उत्पाद में बदलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार किया जा सकता है। क्षेत्रीय संगीत को जब पर्यटन, हस्तशिल्प बाजार और डिजिटल मंचों से जोड़ा जाता है, तो यह न केवल सांस्कृतिक धरोहर को बचाता है, बल्कि रोजगार सृजन और गरीबी उन्मूलन का एक सशक्त माध्यम भी बन सकता है।

क्षेत्रीय संगीत को मान्यता और उसकी वर्तमान स्थिति:-

भारतीय संगीत की सामाजिक-आर्थिक विकासात्मक यात्रा में सबसे पहला कदम क्षेत्रीय संगीत को उचित मान्यता दिलाना है। दशकों से, क्षेत्रीय और लोक संगीत को केवल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखा गया है, जबकि व्यावसायिक पहलुओं (Commercial Aspects of Music) पर मुख्यधारा के संगीत का ही दबदबा रहा है। क्षेत्रीय संगीत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान मिलने से कलाकारों को सामाजिक पहचान और प्रसिद्धि (Social Recognition and Fame) प्राप्त होती है। जब किसी क्षेत्र विशेष की गायन शैली (जैसे राजस्थान का मांगणियार या लंगा संगीत) को मान्यता मिलती है, तो वह उस पूरे क्षेत्र के लिए रोजगार के नए अवसर (Employment Opportunities) पैदा करता है। मान्यता प्राप्त होने से मीडिया और संगीत उद्योग का ध्यान भी इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित होता है, जिससे आय के नए स्रोत विकसित होते हैं।

संगीत के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक उत्थान:-

भारत की आत्मा इसके गाँवों में बसती है और संगीत के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक उत्थान की अपार संभावनाएँ हैं। जब क्षेत्रीय संगीत को एक उद्योग के रूप में विकसित किया जाता है, तो यह ग्रामीण समाज के जीवन स्तर में सुधार (Improvement in Living Standards) लाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेले और त्योहार (Event culture) सीधे तौर पर स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, जब लोक संगीत को पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के साथ (Synergic relation with Tourism and Hospitality Industry) जोड़ा जाता है , तो यह न केवल गायकों और वादकों को, बल्कि आसपास के छोटे व्यापारियों, परिवहन सेवाओं और सत्कार क्षेत्र से जुड़े लोगों को भी अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक लाभ पहुँचाता है। इस प्रकार संगीत, राष्ट्र की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान (Contribution to Nation's Prosperity) देता है।

क्षेत्रीय रूप से विशिष्ट वाद्ययंत्रों का प्रचार और कारीगरों का विकास:-

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था केवल गायन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वाद्य-निर्माण कारीगरों (Instrument making artisans) की आजीविका से भी गहराई से जुडी हुई है। प्रत्येक क्षेत्र के अपने विशिष्ट वाद्ययंत्र होते हैं, जैसे राजस्थान में रावणहत्था, कमायचा,

भपंग या अलगोजा। इन वाद्ययंत्रों का निर्माण एक जटिल और पारंपरिक कला है। क्षेत्रीय रूप से विशिष्ट वाद्ययंत्रों का प्रचार (Promotion of Regionally specialised Instruments) करने से इन वाद्ययंत्रों की मांग बढ़ती है । यदि इन वाद्ययंत्रों को उचित बाजार और निर्यात की सुविधा मिले, तो यह कारीगरों के लिए एक आकर्षक व्यवसाय बन सकता है। इसके अलावा, संगीत उत्पादन में प्रौद्योगिकी (Technology in Music Production) और ई-कॉमर्स ऐप्स के माध्यम से इन विशिष्ट वाद्ययंत्रों को वैश्विक ग्राहकों तक पहुँचाया जा सकता है , जिससे ग्रामीण कारीगरों की आय में सीधे तौर पर वृद्धि होगी ।

वोकल फॉर लोकल' पहल का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव:-

'वोकल फॉर लोकल' (Vocal for Local) मात्र एक नारा नहीं, बल्कि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का एक शक्तिशाली साधन है । जब हम संगीत के क्षेत्र में इस अवधारणा को अपनाते हैं, तो इसका सीधा अर्थ है स्थानीय कलाकारों को प्राथमिकता देना और उनके द्वारा रचित कला का समर्थन करना। 'आत्मनिर्भर भारत और संगीत' (Aatmanirbhar Bharat and Music) का दृष्टिकोण तभी सफल हो सकता है जब हम स्थानीय प्रतिभाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करें । इस पहल के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों में समाज के विभिन्न वर्गों में आय का समान वितरण (Distribution of Income across Sections) सुनिश्चित करना शामिल है । 'वोकल फॉर लोकल' के तहत जब स्थानीय रिकॉर्डिंग स्टूडियो, स्थानीय वाद्ययंत्र और क्षेत्रीय संगीत महोत्सवों को बढ़ावा दिया जाता है, तो यह पलायन को रोकता है और ग्रामीण युवाओं तथा बाल कलाकारों को सामाजिक-आर्थिक लाभ (Socio-economic benefit to child artists) प्रदान करता है ।

ग्रामीण कलाकारों और वाद्ययंत्र निर्माताओं के समक्ष मुख्य चुनौतियाँ:-

यद्यपि क्षेत्रीय संगीत में आर्थिक विकास की अपार क्षमताएँ हैं, फिर भी जमीनी स्तर पर ग्रामीण कलाकारों और कारीगरों को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **बिचौलियों (Middlemen) का वर्चस्व:** अधिकांश ग्रामीण कलाकार सीधे राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय आयोजकों से नहीं जुड़ पाते हैं। इवेंट मैनेजमेंट कंपनियाँ या बिचौलिये मुख्य आय का बड़ा हिस्सा रख लेते हैं, और वास्तविक कलाकार को बहुत कम पारिश्रमिक मिलता है।
- **आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक संगीत का प्रभाव:** आज के समय में डीजे (DJ) और सिंथेसाइज़र (Synthesizer) जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों की जगह ले ली है। इसके परिणामस्वरूप, मांगणियार, लंगा, भोपा और कालबेलिया जैसे पारंपरिक समुदायों के वाद्ययंत्रों की मांग में भारी गिरावट आई है।
- **कच्चे माल की अनुपलब्धता:** कई पारंपरिक वाद्ययंत्र विशिष्ट प्रकार की लकड़ी, जानवरों की खाल या विशेष तारों से बनाए जाते हैं। सख्त वन कानूनों और पर्यावरण नियमों के कारण कारीगरों को यह कच्चा माल आसानी से नहीं मिल पाता, जिससे वाद्ययंत्र निर्माण की लागत बढ़ जाती है।
- **डिजिटल साक्षरता का अभाव:** 'डिजिटलीकरण और संगीत' (Socio-Economic Growth through Digitalisation and Music) के इस युग में, जहाँ संगीत ऐप्स (Spotify, YouTube आदि) से करोड़ों की कमाई हो रही है, वहीं ग्रामीण कलाकार डिजिटल ज्ञान के अभाव में इन मंचों (Platforms) का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं।

पर्यटन, आतिथ्य उद्योग और क्षेत्रीय संगीत का सहक्रियात्मक संबंध:-

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का सबसे प्रभावी मार्ग संगीत को पर्यटन और आतिथ्य उद्योग (Tourism and Hospitality Industry) से जोड़ना है। जब हम राजस्थान का उदाहरण लेते हैं, तो पुष्कर पशु मेला, जैसलमेर का डेजर्ट फेस्टिवल (मरु महोत्सव), और जोधपुर का राजस्थान इंटरनेशनल फोक फेस्टिवल (RIFF) इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन आयोजनों में विश्व भर से पर्यटक आते हैं। यहाँ लोक संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि विदेशी मुद्रा आय (Foreign Exchange Income) का एक प्रमुख साधन बन

जाता है। होटलों, रिसॉर्ट्स और हेरिटेज संपत्तियों (Real Estate and Music) में लोक कलाकारों की नियमित प्रस्तुतियों से उन्हें स्थायी रोजगार मिलता है। इसके अतिरिक्त, इन पर्यटन स्थलों पर स्थानीय कारीगर अपने हस्तनिर्मित वाद्ययंत्र (जैसे छोटे आकार के रावणहत्था या मोरचंग) स्मृति चिह्न (Souvenirs) के रूप में पर्यटकों को बेचते हैं, जिससे उन्हें सीधा आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

'वोकल फॉर लोकल' को धरातल पर उतारने हेतु रणनीतिक सुझाव:-

क्षेत्रीय संगीत को एक लाभदायक आर्थिक मॉडल में बदलने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

1. **सहकारी समितियों (Cooperatives) का गठन:** ग्रामीण कलाकारों और वाद्ययंत्र निर्माताओं की पंचायत या जिला स्तर पर सहकारी समितियां बनाई जानी चाहिए। इससे वे बिचौलियों के शोषण से बच सकेंगे और अपने कार्यक्रमों तथा उत्पादों का सही मूल्य तय कर सकेंगे।
2. **ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग:** सरकार और गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) को चाहिए कि वे कारीगरों को डिजिटल प्रशिक्षण दें। अमेज़न (Amazon), फ्लिपकार्ट (Flipkart) या सरकारी पोर्टल (जैसे ONDC) पर "स्थानीय वाद्ययंत्र" की एक अलग श्रेणी (Category) बनाई जानी चाहिए ताकि विश्व भर के संगीत प्रेमी इन्हें सीधे खरीद सकें।
3. **संगीत शिक्षा में समावेश:** विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों (Music in Higher Education Institutions) में क्षेत्रीय लोक संगीत और वाद्ययंत्र वादन को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इससे नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ेगी और इन कलाओं के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की मांग (रोजगार) में वृद्धि होगी।
4. **सरकारी अनुदान और पेंशन योजनाएं:** संस्कृति मंत्रालय (Ministry of Culture) द्वारा दी जाने वाली फेलोशिप और अनुदानों का दायरा बढ़ाकर उसमें वाद्ययंत्र बनाने वाले कारीगरों को भी विशेष रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion):-

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत की विकासात्मक यात्रा केवल महानगरों या शास्त्रीय घरानों तक सीमित नहीं है; इसका एक बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा भारत के सुदूर गाँवों में बसता है। सम्मेलन के मुख्य विषय, "संगीत से समृद्धि तक," की सच्ची सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था और संगीत के बीच के संबंध को गंभीरता से लिया जाएगा। 'वोकल फॉर लोकल' पहल के माध्यम से यदि हम अपने क्षेत्रीय संगीत, लोक कलाकारों और स्थानीय वाद्ययंत्रों को एक मजबूत बाजार, सम्मान और डिजिटल मंच प्रदान करें, तो यह न केवल भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को विलुप्त होने से बचाएगा, बल्कि ग्रामीण भारत के लिए रोजगार, आजीविका और आर्थिक समृद्धि (Economic Prosperity) का एक असीमित स्रोत भी सिद्ध होगा। क्षेत्रीय संगीत को दान या संरक्षण की नहीं, बल्कि एक सशक्त और आत्मनिर्भर आर्थिक मॉडल की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची (Works Cited):-

1. कोठारी, कोमल. राजस्थान का लोक संगीत और समाज. राजस्थानी ग्रंथागार, 2012.
2. शर्मा, मीनाक्षी. "भारतीय लोक वाद्ययंत्र: दशा और दिशा." कला एवं संस्कृति शोध पत्रिका, खंड 8, अंक 2, 2021, पृष्ठ 45-58.
3. सिंह, भवानी. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पर्यटन और स्थानीय कलाओं का योगदान. रावत पब्लिकेशन्स, 2019.